www.aisectuniversityjharkhand.ac.in | Follow us on:

AISECT UNIVERSITY™

JHARKHAND, HAZARIBAG | AN AISECT GROUP UNIVERSITY

Recognized by : UGC

Climatology

(B.A. Geography Sem.III)

Contact us:

8252299990

8404884433

AISECT University, Hazaribag

Matwari Chowk, in front of Gandhi Maidan, Hazaribag (JHARKHAND)-825301

www.aisectuniversityjharkhand.ac.in info@aisectuniversityjharkhand.ac.in

Climatology (HBGE302)

1. दक्षिणी अमेरिका के भौगोलिक प्रदेशों का संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर – दक्षिणी अमेरिका के भौगोलिक प्रदेश

(1) उत्तरोन्मुख दक्षिणी अमेरिका :– इसके अन्तर्गत कोलम्बिया, वेनेजुएला, गुआना, सुरीनाम तथा गियाना सम्मिलित हैं। ये सभी देश उत्तरोन्मुख हैं, अर्थात इनके आर्थिक संबंध द० अमेरिका के शेष देशों की अपेक्षा उ० अमेरिका अथवा यूरोप के देशों से अधिक घनिष्ठ हैं। ये उत्तर वाहिनी नदियों के प्रवाह क्षेत्र में पड़ते हैं। इनके पृष्ठ प्रदेश में पर्वतीय अथवा पठारी धरातल एवं अग्रभाग में समुद्र तटीय मैदान हैं जो घाटियों द्वारा परस्पर जुड़े हैं। यहाँ प्रमुख खनिज संसाधन विशेषकर पेट्रोलियम , लोहा तथा बाक्साइट उपबन्ध है। जनसंख्या कुछ असमान वितरित पूंजों में प्रमुखतया उच्च भागों में केन्द्रित मिलती है। तटीय भागों में कहवा, केला आदि बागानी फसलों का उत्पादन भी महत्वपूर्ण है। इसके कुछ भाग चिब्बा साम्राज्य के अंग थे। औपनिवेशिक युग में ये सभी देश यूरोपीय साम्राज्यों के अधीन थे। कोलंबिया, बेनेजुएला में स्पेन, गुआना में ब्रिटेन. सुरीनाम में हालैंड तथा गियाना में फ्रांस का आधिपत्य था। स्पेन को छोड़कर शेष साम्राज्यों का दक्षिणी अमेरिका में आधिपत्य इसी भाग तक सीमित था। बागानी कृषि तथा खनिज निर्यात के कारण इस भाग में आर्थिक विकास का स्तर सामान्य से ऊंचा है।

(2) आमेजन बेसिन : आमेजन बेसिन के अन्तर्गत आमेजन एवं उसकी सहायक नदियां के प्रवाह क्षेत्र में पड़ने वाले भु–भाग सम्मिलित है जिसका अधिकांश ब्राजील देश का अंग है। प्राकृतिक परिवेश में इस प्रदेश की विशिष्टता निहित है। अति उष्णार्द जलवायु दलदली भूम सघन सदाबहार वन इस प्रदेश की प्रमुख विशेषतायें हैं। मानव निवास के प्रतिकूल वातावरण के कारण यह अति न्यून जनसंख्या घनत्व का प्रदेश है जिसमें प्रमुखतया मूल तथा वर्णसंकर जातियों के लोग ही निवास करते है। आमेजन आवागमन का एकमात्र साधन है। अतएव आबादी इसी नदी के किनारे अथवा अन्य महत्वपूर्ण सहायक नदियों के किनारे केन्द्रित है। वन वस्तु संग्रह प्रमुख आर्थिक उद्यम है। फलस्वरूप आर्थिक विकास का स्तर निम्नतम है।

(3) ब्राजील उच्चभूमि : ब्राजील उच्चभूमि–में विस्तृत पठारी क्षेत्र एवं उष्णकटिबन्धीय जलवायु के परिदेश में भौगोलिक स्वरूप का विकास हुआ है। दक्षिणी अमेरिका में यही ऐसा भूभाग है जो पूर्तगाल का उपनिवेश रहा। साथ ही यहाँ, अफ्रीका के सर्वाधिक निकट होने के कारण, नीग्रो लोगों का भी आव्रजन हुआ। वर्षा के ऋत्विक भिन्नता एवं अनिश्चितता के अनुसार कृषि में भिन्नता मिलती है। समुद्रतटीय क्षेत्र में गन्ना, कपास आदि व्यापारिक फसलों की कृषि होती है। साओपोलो पटारी क्षेत्र में कहवा की कृषि का विश्वस्तरीय महत्व है। इसी भाग में खनिज संसाधन विशेषतया लोहा, मैगनीज आदि की बहुलता के कारण यहाँ द० अमेरिका का सर्वाधिक महत्वपूर्ण औद्योगिक प्रदेश विकसित है। इस प्रदेश के दक्षिणी–पूर्वी अंचल में सबसे सघन रेलमार्ग जाल विकसित है। विशाल आन्तरिक भाग में सवाना वनस्पति के आधार पर पशुचारण प्रधान आर्थिक उद्यम है। इस प्रकार बाजील पठार के आर्थिक प्रतिरूप एवं विकास स्तर में क्षेत्रीय भिन्तनता मिलती है। एक ओर अति उष्णार्द एवं विरल जनसंख्या प्रदेश तथा दूसरी ओर शौतोष्ण कटिबन्धीय द0 अमेरिकी प्रटेश से यह सर्वथा विलग भौगोलिकस्वरूप प्रदर्शित करता है।

(4) शीतोष्ण कटिबन्धीय प्रटेश : इसके अन्तर्गत अर्जेन्टाइना, उरुग्वे, पराग्वे तथा चीली सम्मिलित हैं। यहाँ अनुकूल शीतोष्ण जलवायु एवं घास के मैदान प्रधान धरातल पर यूरोपीय अथवा मेस्टजिजो लोगों की अधिकता है। उस उपयुक्त वातावरण में इन लोगों ने व्यापारिक पशुपालन तथा अन्नौत्पादक कृषि विकसित की है। खनिज एवं ऊर्जा स्रोतों के अभाव मे यहाँ औद्योगिक विकास सीमित है। प्रमुख नगरों एवं पत्तनों में ही पशु एवं कृषि पर आधारित उच्योष केन्द्रित हैं। ऊन,–मांस, गैहूँ, मक्का आदि का निर्यात ही आर्थिक तंत्र का प्रमुख आधार है। आर्थिक विकास में पराग्वे को छोड़कर यह प्रदेश द0 अमेरिका में अग्रणी है। परन्तु जैसा पहले बताया है पराग्वें, परानापराग्वें नदियों द्वारा ब्राजील की अपेक्षा अर्जेन्टाइना की ओर अधिक अभिमुख है। चीली में यद्यपि–पर्वतीय धरातल की प्रधनता है परन्तु अन्य भौगोलिक विशेषताओं में यह अर्जेन्टाइना के समरूप है। साथ हीं रेलमार्गों द्वारा यह अर्जेन्टाइना से सम्बद्ध है। एण्डीज के पूर्वी पाट प्रटेश के विकास में दोनों टेशों का सक्रिय सहयोग भी है।

(5) मध्यवर्ती एण्डीज पर्वतीय प्रदेश : इकवेडोर, पीरू, बोलीविया जो इनका साम्राज्य तथा स्पेन के वाइसराय प्रशासन द्वारा ऐतिहासिक सांस्कृतिक परम्परा में एक सूत्र रहे ।

2. **दक्षिणी अमेरिका की कृषिगत विशेषताओं (Agriculture Characteristics) का वर्णन करें।**

उत्तर– कृषि मानव का सुर्वेपरि प्राथमिक उद्यम है। यह न केवल आजीविका का साधन है बल्कि मनुष्य के लिए प्रमुख आहार एवं अनेक उद्योगों के लिए कच्चा माल आपूर्ति करने का स्त्रोत भी है। आज भी विश्व कौ लगभग दो–तिहाई से अधिक जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है। इतनी बड़ी जनसंख्या के लिये विश्व क्षेत्रफल का मात्र 10.1 % भूभाग ही फसलगत है जिससे स्पष्ट है कि विश्व का अधिकांश भाग चारागाह (17.6 %), (वन 28.1%) तथा अन्य (44.2%) उपयोगों मे है। दक्षिणी महाद्वीपों में फसलगत भूमि विश्व औसत से कम है। अफ्रीका के कुल क्षेत्रफल का 8% दक्षिणी अमेरिका में 7.6% तथा आस्ट्रेलिया में 3.5% भूमि फसलगत है। विश्व एवं उत्तरी महाद्वीपों की तुलना मे दक्षिणी महाद्वीपों की फसलगत भूमि का प्रतिशत कम है फिर भी प्रति व्यक्ति फसलगत भूमि अधिक है। विश्व में औसत प्रति व्यक्ति फसलगत भूमि 0.5 हेक्टेयर है जबकि आस्ट्रेलिया में 1.5, अफ्रीका में 1.0 एवं दक्षिणी अमेरिका में 0.6 हेक्टेयर है। अतः कम जनसंख्या के कारण यहाँ प्रति व्यक्ति फसलगत भूमि अधिक है जिससे स्पष्ट है कि यहाँ कृषि पर जनसंख्या का भार कम है।

दक्षिणी अमेरिका में प्रधानतः व्यापारिक कृषि के कारण मुख्यतया लाभदायक फसलें ही उगाई जाती है। दक्षिणी अमेरिका में बागाती एवं व्यापारिक अन्नोत्पादन कृषि की प्रधानता है। धान्य फसलों का महत्व मानव खाद्यान्न के लिये सर्वविदित है। प्रमुख खाद्यान्नों में गेहूँ, मक्का एवं घान उल्लेखनीय हैं।

गेहूँ : गेहूँ की कृषि के लिए अनुकूल भौगोलिक दशाओं में जलवायु का महत्व सर्वाधिक है। यह शीतोष्ण कटिबन्धीय पौधा है। इसकी फसल कृषि के लिए 10 से 20^0 सेग्रे0 तापमान, 25 से 00 सेमी० वर्षा, उपजाऊ मिट्टी एवं पर्याप्त उपज अवधि आवश्यक है। गेहूँ के उत्पादन में सघन जनसंख्या की अनिवार्यता नहीं रहती है क्योंकि इसकी कृषि विस्तृत पद्धति द्वार मशीनों की सहायता से सफलतापूर्वक कीं जा सकती है।

गेहूँ उत्पादन में दक्षिणी अमेरिका के समशीतोष्ण कटिबन्धीय मैदान का प्रमुख स्थान है। आस्ट्रेलिया की भाँति यहाँ भी गेहूँ की कृषि का विकास यूरोपीय लोगों द्वारा किया गया। दक्षिणी अमेरिका के गेहूँ उत्पादक देशों में अर्जेन्टाइना बहुत आगे हैं। यह अकेले महाद्वीप का लगभग 2/3 गेहूं उत्पादित करता है। विश्व बाजार में कनाडा के बाट अर्जेन्टाइना द्वितोय वृहतम निर्यातक है। यहाँ भी उत्पादन में अत्यधिक घट–बढ़ होती है। 1961–65 में यहाँ का उत्पादन 7541 हजारी मीटरी टन था जो घटकर 1970 में 4250 हजारी मीटरी टन रह गया।परन्तु 1975 में बढ़कर 8570 हजारी मीटरी टन और 1981 में 11743 हजारी मी० टन हो गया।

अर्जेन्टाइना में गेहूँ की कृषि लाप्लाटा एस्चुएरी से प्रारम्भ होकर अन्दर की ओर एक अर्द्ध चन्द्राकार पेटी में होती है। इस पेटी की लम्बाई लगभग 900 किमी० और चौड़ाई 550 किमी० है। इस पेटी का अधिकतर भाग पम्पा घास का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में गेहूँ को कृषि की पश्चिमी सीमा 40 सेमी० वार्षिक–रेखा द्वारा निर्धारित हो्ती है। इस रेखा के पश्चिम में भी गेहूँ. की कृषि की जाती है लेकिन उन्हीं क्षेत्रों में जहाँ सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं। यहाँ की उपजाऊ मिट्टी में कृत्रिम उर्वरकों की कम आवश्यकता होती है। समतल मैदान होने के कारण ग्रो के उपयोग में सुविधा है। गेहूँ की कृषि बड़े–बड़े फार्मों पर यन्त्र द्वारा की जाती है। गेहूँ के साथ यहाँ मक्का एवं सन की मिश्रित कृषि की जाती है। प्रत्ति हेक्टेयर 113 मीटरी टन से अधिक गेहूँ उत्पन्न किया जाता है। अर्जन्टाइना की कृषि का आधार गेहूँ है और वहाँ की अर्थ–व्यवस्था का प्रमुख स्तम्भ भी। अतः आस्ट्रेलिया की तरह यहाँ भी गेहूँ की कृषि पूर्णतः व्यापारिक ढंग की है। अर्जेण्टाइना अपने उत्पादन का 40% गेहूँ निर्यात कर देता ।

धान : धान एक प्रमुख खाद्यान्न है। यह आर्ट–उपोष्ण तथा उष्ण आर्ट जलवायु में सर्वाधिक विकसित होने वाला पौधा है। 20^0 से 26^0 से० ग्रे० तापमान, 100–150 सेमी० वर्षा एवं उपजाऊ गहरी चौका–तह वाली दोमट मिट्टी धन की कृषि के लिए आवश्यक भौगोलिक तत्व है। ऐसी परिस्थिति दक्षिणी महाद्वीपों के एक विस्तृत क्षेत्र पर विद्यमान है लेकिन धान की कृषि विश्व की तुलना में नगण्य है। इन महाद्वीपों में विश्व का मात्र 6% धान चौदा किया जाता है जिसमें 4% दक्षिणी अमेरिका तथा 2% अफ्रीका में पैदा होता है।

दक्षिणी अमेरिका में धान की कृषि प्रधानतः ब्राजील के दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश, कोलम्बिया के तटवर्ती प्रदेश एवं तटी घाटियों तथा पीरू, वेनेजुएला एवं इक्वेडोर के तटीय भूमि एवं पश्चिमी एण्डीज के ढालों पर होती है। ब्राजील में दक्षिणी अमेरिका के कुल उत्पादन का लगभग दो–तिहाई धान पैदा होता है। यहाँ धन उत्पादित करने वाले राज्यों में रियोग्राण्डे डी सुल, फ्शना, साओपोलों एवं मिनास गेरास विशेष उल्लेखनीय हैं। ब्राजील में घान की कृषि का विस्तार आमेजन घाटी के निचले भाग में हो रहा है। भविष्य में यह एक महत्वपूर्ण घान उत्पादन क्षेत्र हो सकता है। कोलम्बिया का प्रमुख धान उत्पादक क्षेत्र कार्टेजेना है। तटवर्ती प्रदेश के अतिरिक्त नदी घाटियों में धान की अच्छी कृषि होती है। वहाँ का सम्पूर्ण उत्पादन घरेलु बाजार में खप जाता है। पीरू एवं इक्वेडोर में धान कृषि के तटीय मैदान एवं उपजाऊ मिट्टी के कारण सफलतापूर्वक की जाती है। पीरू का गुआस क्षेत्र देश का अधिकांश धान उत्पादित करता है। वेनेजुएला की ओइनको घाटी एवं तटीय मैदान धान उत्पादन के प्रधान क्षेत्र हैं। दक्षिणो अमेरिका का लगभग 90: उत्पादन उपरोक्त पाँच देशों में होता है। अन्य उत्पाटकों में गुआना, सुरीनाम एवं उरुग्वे प्रतिवर्ष एक लाख टन से अधिक धान. पैदा करते है। ये देश भी तटीय क्षेत्रों पर नदी–घाटियों में धान की कृषि करते. हैं। बोलीविया, चीली एवं पराग्वे को वार्षिक उत्पादन एक लाख मीटरी टन से–कम है। अर्जेल्टाइनरा में तीव्र गति से उत्पादन बढ़ा है।

पेय फसलें

दाक्षणी महाद्वीपों की मुद्रादायिनी फसलों में पेय फसलों का स्थान महत्वपूर्ण है। कहवा एवं कोको के उत्पादन में दक्षिणी अमेरिका एवं अफ्रीका विश्व में अग्रणी हैं।

कहवा : कहवा भी चाय की तरह अति प्रचलित पेय है जिसकी सर्वाधिक खपत विकसित देशों में है और उत्पादन विकासशील देशों में। कहवा चाय का प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी बनता जा रहा है जिसके फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक दूसरे से आगे बढ़ने की प्रतिस्पर्धा बनीं रहती है। भौगोलिक सुविधाओं के कारण ब्राजील का पूर्वी पठार कहवा उत्पादन में अग्रणी हो गया है। कहवा का व्यापारिक महत्व बागाती कृषि के प्रचार एवं सार के बाद ही बढ़ा है जिससे स्पष्ट है कि इसका व्यापारिक इतिहास केवल सौ वर्ष पुराना है।

कहवा के पौधों की अनेक किस्मे हैं जिनमे कॉफिया अरेबिका, कॉफिया लाइबेरिया का विशेष व्यापारिक महत्व है। संसार में उगाये जाने वाले पौधों में 75% प्रथम तथा 20% द्वितीय किस्म के कहवा के पौधे हैं। सामान्यतः कहवा के पौधों के उचित विकास के लिये $17–25^0$ सग्रे॰ तापमान, 125 से 250 सेमी॰ वर्षा लौह एवं जीवांश सम्पन्न उपजाऊ मिट्टी एवं पाला, तीव्र धूप एवं आँधी है रहित मौसम आवश्यक हैं। इसके पौधों के लिए लगातार नमी हानिकारक है, अतः पानी उचित निकास आवश्यक है। इसीलिये पठार एवं पहाड़ी ढाल अधिक उपयुक्त क्षेत्र है। गर्म एवं नम जलवायु का पौधा होने के कारण उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में इसे 1800 मीटर तक की ऊंची भूमि पर लगाया जाता है। उपोष्ण प्रदेशों में से 600–900 मीटर तक ऊचे भू–भागों में उगाया जाता है। विश्व का 90% कहवा 500 से 1800 मीटर तक ऊंचे भू–भागों में, अधिकांशत : भूमध्य रेखा के दोनों ओर $24^0–25^0$ अक्षांशों के बीच उगाया जाता है । कहवा की कृषि में मानव श्रम की भी प्रचुर आवश्यकता पड़ती है। पौधों से फल तोड़ने, बीज निकालने और बीजों से कहवा तैयार करते में मानव श्रम की आवश्यकता पड़ती है। कहवा का तौम चौथाई से अधिक उत्पादन दक्षिणी अमेरिका एवं अफ्रीका से प्राप्त होता है। दक्षणी अमेरिका में विश्व का लगभग 40% कहवा उत्पन्न किया जाता है जिसका 60% उत्पादन केवल ब्राजील में होता है ब्राजील में 1975 में विश्व का करीब 24% कहवा उत्पादित हुआ था।

स्पष्ट है कि ब्राजील का न केवल दक्षिणी अमेरिका में, बल्कि विश्व में कहवा उत्पादक देशों में प्रथम स्थान है। 9वीं सदी के अन्त तक यहाँ विश्व का तीन–चौथाई कहवा उत्पन्न किया जाता था। परन्तु अन्य उत्पादकों की प्रगति के कारण इसका सापेक्षिक महत्व गिरा है। यहाँ कहवा की कृषि प्रधानतः दक्षिणी–पूर्वी समुद्र तटीय पठारी ढालों पर की जाती है। साओपोलो एवं मिगासगेरास राज्यों में राष्ट्रीय उत्पादन का 70% से अधिक कहवा उत्पादित किया जाता है। यहाँ कहवा की कृषि के लिए सर्वाधिक सुविधायें उपलब्ध हैं। कहवा उत्पादन कां दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र पराना राज्य का उत्तरी भाग, समुद्रतटीय रियोडीजेनरो क्षेत्र एवं एस्पीरिन्टो सांटो राज्य है। इसके अतिरिक्त उन्तर में बाहिया राज्य का दक्षिणी क्षेत्र एवं गोइयाज राज्य का पूर्वी भाग भी कहवा को कृषि के लिए उल्लेखनीय है। इनमें कहवा को कृषि बहुत सीमित क्षेत्रों पर की जाती है। वस्तुतः बाजोल का प्रधान कहवा क्षेत्र साओपोलो नगर के पृष्ठभूषि में केन्द्रित है। यहाँ कहवा के बड़े–बड़े बागों में कृषि कार्य का अधिकाधिक यंत्रीकरण किया गया है। इन बागों को फैजेण्डा कहते हैं।

ब्राजील में कहवा की कृषि की तीव्र उन्नति के अनेक प्राकृतिक एवं मानवीय कारण है जिनमें पठारी भूमि एवं उसका उचित दिशा में ढाल, उपयुक्त तापमान एवं वर्षा, लावा निर्मित उपजाऊ मिट्टी एवं पर्यात श्रमिक विशेष उल्लेखनोय है। यहाँ की मिट्टी कहवा के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है जिसके फलस्वरूप इसको 'काफी मिट्टी' के नाम से पुकारते हैं। कहवा उत्पादन क्षेत्रों में आवागमन के साधनों का विकास भी एक लाभदायक कारक है।

ब्राजील अपने उत्पादन का अधिकांश निर्यात कर देना है। कहवा के निर्यात में सान्तोष पतन का विशेष महत्व है। सान्तोंस एवं साओपोलो को मिलाने वाली रेल लाइन को "काफी रेलवे" कहा जाता है। ब्राजील में कहवा की कृषि प्रधनतः व्यापारिक होने के कारण विश्व बाजार की मांग के अनुसार घटती–बढ़ती है। इसके उत्पादन को निरन्तर बनाये रखने के लिये अनेक व्यापारिक एवं कानूनी व्यवस्थायें यहाँ की सरकार को करनी पड़तो है।

दक्षिणी अमेरिका के अन्य महत्वपूर्ण कहवा उत्पादकों में इक्वेडोर, वैनेजुएला एवं पीरू का वार्षिक उत्पादन पचास हजार मीटरी टन से अधिक रहता है। इन देशों में एण्डीज के ढालो पर कहवा के बाग लगायें गये हैं। स्पष्ट है कि ऐसे बाग उत्तरी पीरू से वेनेजुएला तक एण्डीज के पश्चिमी ढालों पर फैले हैं। बोलीविया, पराग्वे एवं गुआना में भी कहवा की कृषि की जाती है।

अन्य फसलें

. कोकों : दक्षिणी अमेरिका में कोको की कृषि प्रधानतरू ब्राजील, इक्वेडोर एवं वेनेजुएला में की जाती है। बाजील में विश्व का ।3% तथा दक्षिणी अमेरिका का 65% कोको उत्पादित किया जाता है। कहवा उत्पादन में विश्व में इसका दूसरा स्थान है। पहले यहाँ आमेजन बेसिन में कोको की कृषि विकसित की गई बाद में बाहिया के तटवर्ती प्रदेश में कोकों के बाग अधिक लाभदायक सिद्ध हुए। इस समय ब्राजील का अधिकांश कोको इसी 500 किमी० लम्बी तटवर्ती पेटी से प्राप्त होता है। इक्वेडोर एवं बेनेजुएला से तटवर्ती भागों में कोको की कृषि विकसित हुई है।

चाय : दक्षिणी अमेरिका में चाय की कृषि का विकास हो रहा है। 1981 में इनका सामूहिक उत्पादन केवल 2 लाख मीटरी टन था जो विश्व का लगभग 11% था

कपास : दक्षिणी महाद्वीपों में कपास सर्वाधिक महत्वपूर्ण रेशदार फसल है। अफ्रीका एवं दक्षिणी अमेरिका की मुद्रादायिनी फसलों में कपास का भी स्थान महत्वपूर्ण है। इन दोनों महाद्वीपों में विश्व की 20% कपास उगाई जाती है।

कपास की कृषि हेतु आवश्यक भौगोलिक परिस्थितियों में 25^0 से० 30^0 सेमी० तापमान,100–120 सेमी० वर्षा, उपजाऊ मिट्टी, सुप्रवाहित समतल धरातल, पाला रहित मौसम एवं पर्याप्त श्रमिक प्रमुख हैं। कपास की कृषि के लिए पाला एवं सूखा बहुत हानिकारक होता है। उष्ण कटिबन्धीय पौधा होने के कारण सामान्यतः इसे 40^0 उत्तर से 30^0 दक्षिण अक्षांशों के बीच पैदा किया जाता है। सीमान्त क्षेत्रों में सिंचाई द्वारा कपास की कृषि की जाती है।

दक्षिणी अमेरिका में विश्व की 8 प्रतिशत कपास उत्पन्न होती है। इस महाद्वीप के प्रधान उत्पादकों में ब्राजील, कोलम्बिया, पीरू एवं अर्जेन्टाइना अग्रणी है। ब्राजील विश्व का पाँचवां तथा तीन दक्षिण महाद्वीपों का वृहतम कपास उत्पादक है। यहाँ विश्व की 4 प्रतिशत से अधिक तथा महाद्वीप की 2/3 कपास उत्पन्न की जाती है।

रबर : दक्षिणी अमेरिका में रबर प्रधानत: ब्राजील एवं इक्वेडोर में उत्पादित किया जाता है। इस महाद्वीप का 95% रबर ब्राजील के आमजन क्षेत्र से प्राप्त होता है। यहाँ अधिकांश उत्पादन जंगली वृक्षों से होता है। बाजील के भूमध्यरेखीय जंगलों में रबर के पेड़ों की बहुतायत है लेकिन आवागमन की असुविधा के

कारण यहाँ का वार्षिक उत्पादन मात्र 23000 मीटरी टन है। ब्राजील के घने जंगलों में रबर इकट्ठा करने के लिए श्रमिका की भी कमी है।

तम्बाकू : दक्षिणी अमेरिका में तम्बाकू की कृषि प्रधानतः ब्राजील के पूर्वी तटीय पठारी प्रदेश में की जाती है। ब्राजील में विश्व का लगभंग 6% तथा दक्षिणी अमेरिका 65% से अधिक तम्बाकू उत्पन्न होता है। ब्राजील में विश्व का चौथा बड़ा उत्पादक देश है। यहाँ के प्रमुख तम्बाकू उत्पादक राज्यों में वाहिया, रियोआस्डे डी सुल एवं साओपोलो अग्रणी हैं। मिनासगेरास एवं सानाकेटेरीन अन्य प्रमुख उत्पादक राज्य है। यहाँ का आधा से अधिक तम्बाकू बाहिया एवं रियोग्रान्डे डी सुल राज्य में उगाया जाता है। ब्राजील में तम्बाकू की कृषि आधुनिक ढंग से की जाती है। उत्पादन बढ़ाने के लिये उर्वरकों एवं दवाओं का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता है। परिणामस्वरूप प्रति हेक्टेयर उत्पादन अधिक है। ब्राजील अपने उत्पादन का लगभग 20% तम्बाकू निर्यात करता है।

अर्जेन्टाइना दक्षिणी अमेरिका का दूसरा बड़ा तम्बाकू उत्पादक है। यहाँ तम्बाकू की कृषि प्रधानतः उत्तरी मैदानी भागों में की जाती है। यहाँ का अधिकांश उत्पादन देश में खप जाता है। कोलम्बिया इस महाद्वीप का तीसरा बड़ा उत्पादक देश है। यहाँ महाद्वीप का लगभग 10% तम्बाकू प्रधानतः सान्तेदर, बोलिवार एवं मैन्डलेना प्रान्तों में उगाया जाता है। यहाँ के अन्य उत्पादक प्रान्तों में तोलिया एवं एन्टीओकिया विशेष उल्लेखनीय है। पराग्वे महाद्वीप का लगभग 4% तम्बाकू उत्पादित करता है। यहाँ तम्बाकू अपने गुणों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ तम्बाकू की कृषि प्रधानतः दक्षिणी मैदानी भाग में की जाती है। अधिकांश उत्पादन निर्यात कर दिया जाता है। वैनेजुएला, चीली एवं पीरू अन्य प्रमुख उत्पादक है। वेनेजुएला–के उत्तरी तटीय क्षेत्र तम्बाकू की कृषि के प्रधान क्षेत्र हैं। उत्पादन में तीव्र वृद्धि के कारण यह द०अमेरिका का चौथा बड़ा उत्पादक बन गया है।

गन्ना या चीनी : ब्राजील में दक्षिणी अमेरिका की आधी से अधिक एवं विश्व की 6 प्रातशत चीनी उत्पादित की जाती है। इस प्रकार यह विश्व का चौथा बड़ा चीनी उत्पादक है। ब्राजील में चीनी उत्पादन का कार्य 16वीं सदी में पुर्तगालियों द्वारा प्रारम्भ किया गया । प्रारंभ में अधिकांश गन्ना उत्तरी–पूर्वी तटीय क्षेत्र में उगाया जाता था। परन्तु अब इसका विस्तार अनेक क्षेत्रों में हो गया है। ब्राजील के प्रमुख गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में उत्तर–पूर्वी तटीय क्षेत्र अब भी महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में पराइबा, परनाम्बुको अलगोआस, सरजीये एवं बाहिया राज्य प्रमुख गन्ना उत्पादक है। दक्षिणी–पूर्वी क्षेत्र में मिनास गिरास, साओपोलो तथा रिओ डी जैनेरों राज्य अग्रणी गन्ना उत्पादक है। ब्राजील के आन्तरिक पठारी भाग में भी गन्ने की कृषि विकसित की जा रही है। वैज्ञानिक ढंग से कृषि न होने के कारण यहाँ प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम है। राष्ट्रीय उत्पादन की 10 प्रतिशत चीनी निर्यात की जाती है।

ब्राजील में चीनी उत्पादन का कार्य 16वीं सदी में पुर्तगालियों द्वारा प्रारम्भ किया गया । प्रारंभ में अधिकांश गन्ना उत्तरी–पूर्वी तटीय क्षेत्र में उगाया जाता था। परन्तु अब इसका विस्तार अनेक क्षेत्रों में हो गया है। ब्राजील के प्रमुख गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में उत्तर–पूर्वी तटीय क्षेत्र अब भी महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में पराइबा, परनाम्बुको अलगोआस, सरजीये एवं बाहिया राज्य प्रमुख गन्ना उत्पादक है। दक्षिणी–पूर्वी क्षेत्र में मिनास गिरास, साओपोलो तथा रिओ डी जैनेरों राज्य अग्रणी गन्ना उत्पादक है। ब्राजील के आन्तरिक पठारी भाग में भी गन्ने की कृषि विकसित की जा रही है। वैज्ञानिक ढंग से कृषि न होने के कारण यहाँ प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम है। राष्ट्रीय उत्पादन की 10 प्रतिशत चीनी निर्यात की जाती है।

पीरू भी दक्षिणी अमेरिका का महत्वपूर्ण गन्ना उत्पादक देश है। यहाँ प्रति हेक्टेयर उत्पादन महाद्वीप के सभी देशों से अधिक है। पीरू में विश्व की लगभग 1 प्रतिशत तथा महाद्वीप को 9 प्रतिशत चीनी उत्पादित की जाती है। गन्ने की कृषि के लिए पीरू में आदर्श परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं – उपजाऊ मिट्टी पर्याप्त तापमान, सिंचाई के साधन, गुआनों की खाद एवं कुशल श्रमिक। यहाँ प्रति कुन्टल गने से सर्वाधिक चीनी प्राप्त होती है। पीरू का उत्तरी तटवर्ती भाग, जिसमें अनेक तटी–घाटियाँ स्थित हैं, गन्ना की कृषि के लिये प्रसिद्ध हैं।

दक्षिणी अमेरिका के अन्य महत्वपूर्ण गन्ना उत्पादकों में कोलम्बिया, इक्वेडोर, चीली, बोलीविया विशेष उल्लेखनीय हैं। कोलम्बिया का अधिकांश गत्ना पश्चिमी तटीय मैदान एवं नदी–घाटियों, वेनेजुएला का उत्तरी मैदानी भागों, गुयाना का तटीय मैदान एवं इक्वेडोर का दक्षिणी पश्चिमी तटीय मैदान में उगाया जाता है। बोलीविया एवं उरुग्वे का वार्षिक उत्पादन क्रमशः 213 हजार तथा 95 हजार टन है।

3. **दक्षिणी अमेरिका की जनसंख्यात्मक विशेषताओं का वर्णन करें।**
(Discuss the Demographic characteristics of South America.)

उत्तर– सन् 1981 ई० में द० अमेरिका की कुल जनसंख्या 38 करोड़ थी जो 2000 59.2 करोड़ हो गई। औसतन द० अमेरिका में प्रति वर्ग किलोमीटर केवल 18 व्यक्ति मिलते हैं। दक्षिणी अमेरिका में 90 प्रतिशत जनसंख्या तटवर्ती प्रदेशों में है। पूर्वी–तट सर्वाधिक जनसंख्या का क्षेत्र है जहाँ पाँच जनपुंजों में यहाँ की 65 प्रतिशत जनसंख्या मिलती है। नगरीय जमपुंजों में 1–व्यूनसआयर्स––मांटेविडियो, 2–पोर्ट अलेग्री, 3–स्योडीजेनेरो–साओपोलों, 4–सल्वाडोर एवं 5–परनाम्बुको विशेष उल्लेखनीय हैं। पश्चिमी तट पर सेन्टियागो बालपरैजों एवं लीमा प्रमुख जनपुंज हैं। उत्तरी भाग में बोगोटा–मेडेलिन एवं काराकास लघुपंज हैं। सामूहिक रूप से इन पुंजों में दक्षिणी अमेरिका की 75 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या मिलती है जो क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से अति लघु है। केवल दो पुंजों में इस महाद्वीप की 50 प्रतिशत जनसंख्या है। दक्षिणी अमेरिका के ये जनपुंज वितरण के शीर्ष स्थल हैं जहाँ से चारों ओर वितरण में तीव्र प्रवणता दिखाई देती है। अतः संपूर्ण आन्तरिक भाग, जिसमें आमेजन की घाटी एवं उत्तरी पठारी भाग तथा दक्षिणी प्रायद्वीप हैं, न्यूनतम जनसंख्या के क्षेत्र हैं जहाँ महाद्वीप की केवल एक प्रतिशत जनसंख्या है। यहाँ का औसत घनत्व प्र० व० किमी०० मात्र 3 व्यक्ति है। दक्षिणी अमेरिका में मध्यम जनसंख्या का वितरण बहुत कम क्षेत्रों पर है। ऐसे क्षेत्रों में मध्य चीली, पराना–पराग्वे की घाटी, ब्राजील के पठार का पूर्वी भाग, उत्तरी पीरू एवं इक्वेडोर का पश्चिमी भाग, अमेरिका की घाटी एवं उत्तर का तटवर्ती प्रदेश उल्लेखनीय हैं।

दक्षिणी अमेरिका का औसत घनत्व विश्व घनत्व का आधा है। इस महाद्वीप का कोई थी देश विश्व औसत के बराबर भी नहीं है। यहाँ का सबसे घना बसा देश इक्वेडोर है जहाँ का औसत घनत्व मात्र 29 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी० है। परन्तु महाद्वीप के सर्वाधिक सघन क्षेत्रों जैसे मध्य चीली, दक्षिणी ब्राजील, पराना–उरुग्वे की निचली घाटी एवं इक्वेडोर तट में औसतन 100 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी० से अधिक घनत्व है। इन प्रदेशों में द० अमेरिका की आधी से आधिक जनसंख्या है और तीन चौथाई से अधिक नगर स्थित है। इन क्षेत्रों से बाहर प्रायः प्रत्येक दिशा में जनसंख्या का घनत्व तीव्रगति से घटता है। सम्पूर्ण मध्यवर्ती भाग–आमेजन घाटी एवं उत्तरी पठारी भाग तथा दक्षिणी प्रायद्वीपीय भाग न्यूनतम घनत्व के क्षेत्र हैं जबकि ये महाद्वीप के आधे से अधिक श्षेत्रफल पर फैले हैं। दक्षिणी अमेरिका में औसत घनत्व के क्षेत्र बहुत कम हैं। ब्राजील पठार का पूर्वी भाग, पम्पा क्षेत्र, गुआना का तटवर्ती भाग, बोलीविया का मध्यवर्ती भाग, उत्तरी पीरू, इक्वेडोर एवं कोलम्बिया तथा वेनेजुएला के कुछ भाग मध्यम घनत्व प्रदर्शित करते हैं।

जनसंख्या का घनत्व एवं नगरों की संख्या

देश	घनत्व (1981) (प्रति व्यक्ति वर्ग किमी ०)	नगरीय जनसंख्या कुल का %	नगर (एक लाख अधिक आबादी)
अर्जेन्टाइना	10	82	15
इक्वेडोर	29	45	3
उरुग्वे	16	84	1
कोलम्बिया	24	70	24
गियाना	1	—	0
गुआना	4	—	1
चीली	15	80	12
पराग्वे	8	39	1
पीरू	14	67	10
ब्राजील	15	68	77
मालवीना	—	100	0
वेनेजुएला	15	83	11
सुरीनाम	3	—	1

दक्षिणी अमेरिका में इक्वेडोर सबसे घना बसा देश है। यहाँ की लगभग आधी जनसंख्या केवल दो नगरों में है जिसमें अन्य क्षेत्रों का घनत्व घट गया है। 4 से 29 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी० घनत्व वाले देशों में क्रमशः इक्वेडोर कोलम्बिया, उरुग्वे, चीली, वेनेजुएला, पीरू एवं ब्राजील हैं। अन्य देशों का घनत्व ।0 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी० से कम है। ब्राजील में औसत घनत्व के कम होने में आमेजन का जनरिक्त क्षेत्र एवं आन्तरिक पठारी भाग की विरल जनसंख्या का हाथ है। इसी प्रकार अन्य देशों में भी जनसंख्या का वितरण असमान है। जनसख्या के इस असमान वितरण के अनेक भौतिक एवं मानवीय कारण हैं जिनमें निम्म उल्लेखनीय हैं——

(1) द० अमेरिका में भी अतिशुष्क तथा अति आर्द क्षेत्र अनाकर्षक अर्जेन्टाइना है। दक्षिणी अर्जेन्टाइना एवं अटाकामा क्षेत्र अतिशुष्कता के कारण तथा आमेजन घाटी अति आर्द्रता के कारण न्यूनतम जनसंख्या के क्षेत्र है। बाजील कौ आन्तरिक पठारी भूमि तथा एण्डीज पर्वतमाला भी कम आकर्षक क्षेत्र है लेकिन उत्तरी एण्डीज, विशेषकर इक्वेडोर एवं कोलम्बिया में, जलवायु की अनुकुलता के कारण अपेक्षाकृत आकर्षक हो गया है। इसी प्रकार बोलीबिया में एण्डीज की पठारी आकृति एवं उपयुक्त जलवायु के कारण घनत्व बढ़ गया है। द0 अमेरका का यह भाग प्रारम्भ से ही आकर्षक रहा है क्योंकि इन्हीं क्षेत्रों में इनकी प्राचीन संस्कृति का विकास हुआ था ।

(2) दक्षिणी अमेरिका में समशीतोष्ण जलवायु के क्षेत्र अति सघन बसे हैं क्योंकि इस प्रकार की जलवायु कृषि के आतिरिक्त यूरोप से आनेवाले लोगों के लिये विशेष उपयुक्त रही है। अतः पम्पा क्षेत्र, मध्य चोली एवं दक्षिणी ब्राजील इसके प्रधान आकर्षण रहे हैं। उत्तरी भाग में खनिजों एवं कुछ बागाती कृषि से आकर्षित होकर कम उपयुक्त जलवायु में भी बसने की, प्रवृत्ति बढ़तों गई और आज ये क्षेत्र भी आकर्षक हो गये हैं। कोलम्बिया, इक्वेडोर एवं उत्तरी) पीरू में एण्डोज के प्रभाव के कारण जलवायु लगभग समशीतोष्ण हो गई है जो यूरोप से आये आवजकों के लिये अनुकूल है।

3) कृषि के लिए मिट्टी कौ उपयुक्तता भी जनसंख्या के घनत्व को घटाने—बढ़ाने का एक प्रमुख कारण है। बहुघा लौटोजोलिक क्षेत्र विरल जनसंख्या के क्षेत्र हैं जैसे आमेजन घाटी तथा पेडाकाल मिड्डियाँ (वरनोजम चेस्टनट आदि) अधिक आकर्षक हैं। पराना—पराग्वे छाटी। इसी से अधिक आकर्षक रही है।

4) दक्षिणों अमेरिका पूर्णतः यूरोपीय उपनिवेश रहा है और साथ ही यहाँ को मूल जातियाँ एण्डोज में केन्द्रित रही है। अतः तटवर्ती प्रदेशों पर आवजकों का घनत्व बढ़ता ही गया। बाहर से आने वाले नगरों में रहना श्रेयस्कर समझते रहे हैं, इसलिये यहाँ नगरों की अधिकता है जो तटवर्तो प्रदेश में स्थित है। इन नगरों के कारण तटवर्ती प्रदेशों का घनत्व बहुत बढ़ गया है।

(5) आत्तरिक भागों में यहाँ अफ्रीका की तरह मूल जाति के लोगों का अभाव है जिससे विस्तृत भाग जनशून्य है। अब भी आन्तरिक भागों यें आवागमन के साधनों का अभाव है साथ ही कोई महत्वपूर्ण खनिज भी नहीं पाए जाते जो जनसंख्या को आकर्षित कर सकें।

(6) बोलीविया पठार के खनिज सम्पन्न क्षेत्र में घनत्व अधिक है क्योंकि वहाँ सम जलवायु के साथ–साथ टिन तथा चांदी जैसे महत्वपूर्ण खनिज भी उपलब्ध है।

जनसंख्या संरचना : दक्षिणी अमेरिका मे इस समय चार प्रधान प्रजातियाँ है–(1) मूल रेडड़ण्डियन जो एण्डीज के पर्वतीय क्षेत्रों में पाये जाते हैं और प्रारम्भ से हो इन्हीं क्षेत्रों की ओर आकर्षित रहें हैं। इसके अन्य बसाव आमेजन घाटी के पठारी प्रदेशों में है जहाँ आजीविका के प्रमुख साधन कृषि, शिकार एवं वस्तु संग्रह है। (2) यूरोप से आने वाली जातियां का सर्वत्र प्रसार यहाँ को आबादी की एक प्रमुख विशेषता है। सम्पूर्ण महाद्वीप इनका उपनिवेश रहा है और अब ये अपने को अमेरिकी कहने लगे हैं। यूरोप से आते वालों में स्पेन एवं पुर्तगाली सर्वाधिक है। ये महाद्वीप के समशीतोष्ण कटिबन्धीय भागों में अधिक पाये जाते है क्योकि यहाँ कृषि, पशुपालन, उद्योग एवं जलवायु की दशाये अधिक अनुकूल है अफ्रिका एवं एशिया के अश्वेतों का आवजन प्रमुख रूप से श्रमिकों के रूप में हुआ। इनकी सर्वाधिक संख्या उन क्षेत्रों मे है जहाँ बागाती कृषि के लिये आज भो अधिक श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है। उष्ण कटिबन्धीय अमेरिका इनके लिये अधिक आकर्षण रहा है। (4) वर्ण संकर जाति के लोग जिन्हें मैस्टीजों कहते है। दक्षिणी अमेरिका के प्रत्येक क्षेत्र में पाये जाते हैं। इन क्षेत्रों की मिश्रित आबादी ने एक नई अमेरिको संस्कृति को जन्म दिया है।

0.4. **ब्राजील उच्च भूमि का सविस्तार वर्णन करें।**

उत्तर– **जनसंख्या** –लगभग 60 लाख (1981) क्षेत्रफल––4.3 लाख वर्ग किमी०

खनिज–संसाधन –लोहा, मैगनीज, सोना, चाँदी, मालिब्डेनम, निकेल, टंग्स्टन, हीरा

आर्थिक उद्यम –कृषि एवं पशुपालन, वस्तु निर्माण, उद्योग, खनिज उत्खनन, मत्स्य आखेट इत्यादि

प्रमुख नगर –साओपोलो, रियोडीजेनेरो, बेलीहोरीजोन्टे, रेसीफे, बाहिया, पोर्ट एलेग्री, सान्तोस, कुरीतोबा, ब्राजीलिया, फोर्टलेजा

इस भौगोलिक प्रदेश के अन्तर्गत आमेजन बेसिन के –दक्षिणी–पूर्वी पठारी भाग तथा तटीय मैदान को सम्मिलित किया गया है। यह ब्राजील के कुल क्षेत्रफल का लगभग आधा है और यहाँ ब्राजील की लगभग 95% से भी अधिक जनसंख्या निवास करती है। इसी प्रदेश में ब्राजील की अधिकांश खनिज सम्पदा, कृषि भूमि, पशुचारण क्षेत्र, उद्योग–धन्धे, परिवहन के साधन एवं अधिकतर नगर स्थित हैं। यह प्रदेश रिक्त उत्तर (Empty North) से प्राकृतिक एवं मानवीय परिवेश, संसाधनता तथा क्षेत्रीय संगठन प्रारूप में सर्वथा भिन्न है। दक्षिण में ब्राजील उच्च भूमि का विस्तार उत्तरी उरुग्वे में भी मिलता है जबकि पराग्वे घाटी का ऊपरी भाग ब्राजील उच्च भूमि से भिन्न पराना–पराग्वे निम्त भूमि के सदृश है। इस प्रदेश के अन्तर्गत विस्तृत पठार के साथ ही पूर्वी तट पर स्थित उपालम्ब एवं सागर तट के मध्य स्थित संकीर्ण मैदानी भाग भी आता है। पठारी भांग की औसत ऊंचाई 1000 मीटर है। उच्च भूमि का मध्य एवं पश्चिमी भाग समतल पठारी है परन्तु पूर्वी भाग में अनेक पर्वत श्रेणियाँ तथा मध्यवर्नो नदी–घाटियाँ पाई जातो हैं।

उच्चभूम की भौमकीय संरचना में रवेदार चट्टानें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जो आंशिक रूप में परतटार चट्टानों से ढकी हैं। प्रदेश के आधे भाग पर आर्कियन चट्टाने पाईं जाती हैं तथा इनसे निर्मित चट्टानें भी एक छोटे भाग में पाई जाती हैं जिससे ब्राजील का अधिकांश खात्रेज संसाधन–लोहा, पैगनीज, निकले, सीसा, चौंदी, सोना, हीरा, बाक्साइट इत्यादि प्राप्त होता हैं। कुछ भाग में परतदार चट्टाने भी पाई जाती हैं। ट्रियाँसिक युग के अन्तिम समय में वृहत पैमाने पर लावा पृथ्वी से निकलकर लगभग 80.000 वर्ग किमी0 क्षेत्र से फैल गया जिसकी गहराई 600 मौ० से भी अधिक है। बेसाल्ट जमाव से निर्मित टेरा रोक्सा नामक अति उर्वर मिट्टी कहवा कौ कृषि के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

ब्राजील के सम्पूर्ण क्षेत्रफल लगभग 5% कृषि तथा बागानों के अंतर्गत है जबकि 25% चारगाह 5% जंगल तथा 55% अनुत्पादक भूमि है। लगभग 1.8 करोड हेक्टेयर पर कृषि होती है जिसका अधिकांश चार दक्षिणी राज्यों साओपोलो, पराना, सान्ताकैटारिना तथा रियोग्रान्डे डी मुल मे है। साओपालो के 1/5 क्षेत्रफल पर कृषि होती है जबकि अन्य तीन राज्यों में यह 1/10 से भी कम है। कृषि के लिये सर्वोतम भूमि दक्षिणी ब्राजील में है जबकि आधे से अधिक चारागाह मिनास गेरास, गीपाज तथा मांटोग्रासो राज्यों में है। दक्षिण में शीतोष्ण घास के मैदान तथा पूर्वी पठार के मानव निर्मित घास के मैदान पशुचारण हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अन्य क्षेत्रों में चारागाह निम्न कोटि के तथा उनकी धारणा क्षमता भी कम है। ब्राजील के कृषि संसाधन के आधार पर बहुत से विद्वानों ने इसे भावी संभावनाओं का देश कहा है। जहाँ बहुंत विस्तृत क्षेत्र अब भी अविकसित पड़ा हुआ है।

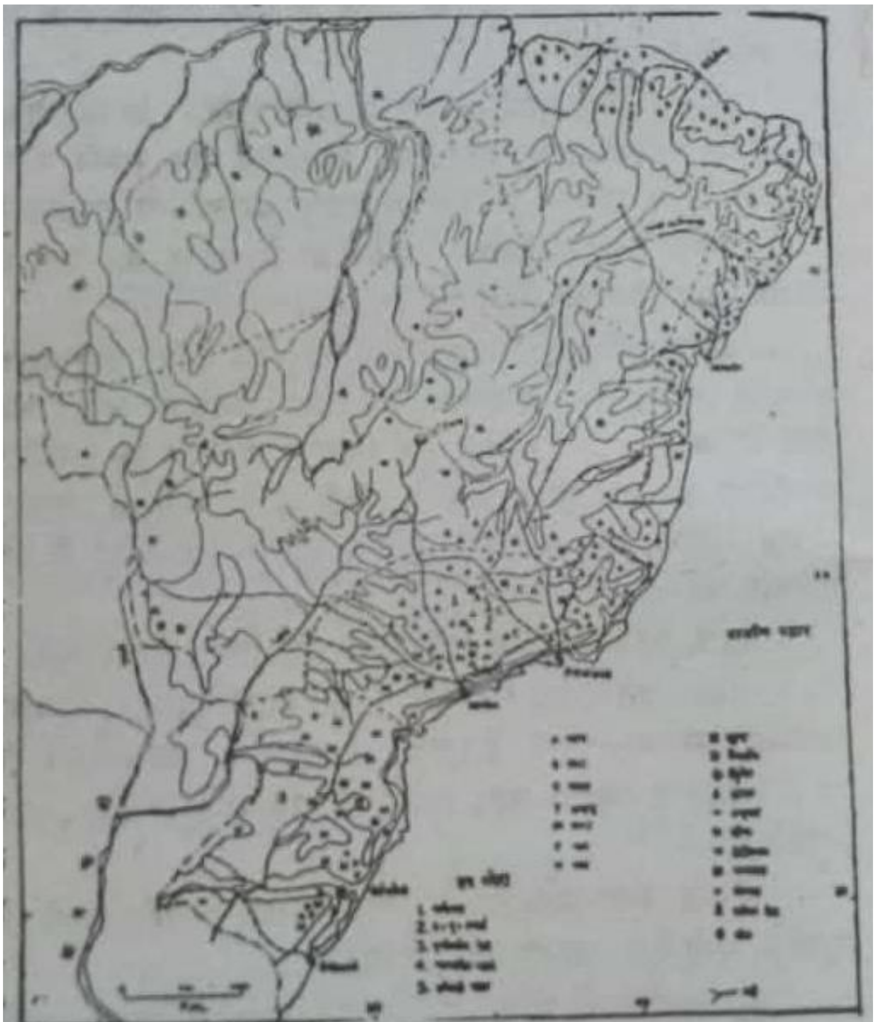

चित्र—ब्राजील उच्चभूमि

ब्राजील एक कृषि प्रधान देश है जहाँ फसलों का उत्पादन तथा पशुपालन आपैनिवेशिक काल से ही प्रमुख उद्यम रहा है। वर्तमान समय में खनिज उत्खनन तथा उद्योग के विकास के बावजूद क्रियाशील जनसंख्या का लगभग आधा कृषि तथा पशुपालन में लगा हुआ है । कृषि कार्य पूर्वी समुद्रतटीय मैदानों तक ही सीमित है। गेहूँ को छोड़ कर शेष फसलों के उत्पादन में ब्राजील आत्मनिर्भर है तथा निर्यात भी करता है । निर्यात व्यापार के मुल्य का 90% कृषि उत्पादों का होता है। मक्का, धान, गेहूँ, कहवा. गन्ना, कपास, मैनिआक और बीन्स प्रमुख फसले है जिनकी खेती 90% कृषि उत्पादों का होता है। मक्का, धान, गेहूँ, कहवा, गन्ना, कपास, मैनिआक और बीन्स प्रमुख फसले है जिनकी खेती 90% उत्पादो का होता है। मक्का, धान, गेहूँ, कहवा, गन्ना, कपास, मैनिआक और बीन्स प्रमुख फसलें है जिनकी खेती 90% कृषि क्षेत्रफल पर होती है। मक्का बाहिया के दक्षिण स्थित राज्यों, धान मिनाम गरास, साओपोलो तथा रियोग्रान्डे डी सुल राज्यों में उगाया जाता है। धान की खेती दक्षिणी राज्यों में मात्र दो लाख हेक्टेयर भूमि पर होती है। मैनिआक विस्तृत रूप में सम्पूर्ण पूर्वी ब्राजील में उगाया जाता है जिससे प्राप्त कसावा तथा टैपिओका प्रमुख भोज्य पदार्थ हैं। कहवा ब्राजील को प्रमुख मुद्रादायिनी फसलें हैं। जिसकी कृषि कुल कृषिगत क्षेत्रफल के 1/10 भाग पर होती है। ब्राजोल विश्व का वृहत्तम कहवा उत्पादक है जहाँ से विश्व उत्पादन का 1/4 प्राप्त होता है परन्तु राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में अब इसका सापेक्षिक महत्व घट रहा है। उत्तरी–पूर्वी ब्राजील कपास उत्पादन में सर्वप्रमुख रहा है परन्तु 1888 में दासप्रथा समाप्त होने से इसका महत्व घट गया है। इस शताब्दी के तीसरे दशक में कहवा बाजार में मंदी के परिणामस्वरूप कपास का महत्व बढ़ा तथा कुल उत्पादन का 3/4 मिनास, गेरास, साओपोलो तथा पराना राज्यों से प्राप्त होता है। अकेले साओपोलो ब्राजी के कुल कपास उत्पादन का आधा से अधिक उत्पन्त करता है। ब्राजील विश्व का तृतीय वृहत्तम गन्ना उत्पादक है तथा अब इसकी कृषि का विस्तार भी हो रहा है। कोको उत्पादन में घाना के बाद ब्राजील दूसरे स्थान पर है तथा इसकी खेती बहिया के समीप उष्ण–आर्द समुद्रतटीय भागों में अधिक महत्वपूर्ण है। तम्बाकू उत्पादन में बाहिया, रियो ग्रान्डे डी सुल, मिनास गेरास, सान्ता कैटारिना तथा परानाम्बुको राज्य उल्लेखनीय है।

फलोत्पादन के लिए आवश्यक भौगोलिक दशायें आाजील में बहुत अनुकूल है तथा आधुनिक विधियों के प्रयोग हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। उत्तरे भाग उष्ण कटिबन्धीय तथा दक्षिणी भाग भूमध्यसागरीय फलों के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है। नीबू, सन्तरा तथा अन्य रसदार फलों का उत्पादन महत्वपूर्ण है। केला की कृषि भी महत्वपूर्ण है। अंगूर की खेती रियोडीजेनरो के दाक्षिण में होती है परन्तु यह रियोग्राण्डे डी सुल में केन्द्रित है तथा इसका तीव्र प्रसार भी हो रहा है। यह प्रदेश शराब उत्पादन ये लगभग आत्मनिर्भर है।

सघनता तथा आर्थिक प्रतिरूप के उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि उच्चभूमि की अधिकांश जनसंख्या का मर्म प्रदेश में केन्द्रित होना स्वाभाविक है। शेष का अधिकांश पूर्वी सागरतटीय क्षेत्रों अथवा दक्षिणी प्रान्तों में निवास करती हैं। सम्पूर्ण बाजील की जनसंख्या 1230 लाख (1981) है जो प्रतिवर्ष 3 % की दर से बढ़ रही है। यह वृद्धि दर विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा अधिक है तथा भविष्य में घटती मृत्युदर के परिणामस्वरूप जनसंख्या वृद्धि दर में ह्रास होने की आशा नहीं है। इस जनसंख्या का 5 % से भी कम आमेजन वेसिन में है। अतः उच्चभूमि में जनसंख्या का घनत्व उत्तरी भागों की तुलना में बहुत अधिक है। इस भाग में भी बीसवीं सदी के पूर्वार्द में वृहत पैमाने पर हुए आव्रजन के पश्चात भी आन्तरिक पठार का विस्तृत क्षेत्र अभी जसंख्या रहित है तथा दक्षिणी प्रान्तों की उपजाऊ भूमि अविकसित है। देश के आर्थिक विकास को ध्यान में रखते हुए सरकार कुशल श्रमिकों के आव्रजन को ही प्रोत्साहन दें रही है। इस दीर्घकालीन आवजन के परिणामस्वरूप यहाँ विभिन्न जातियों का मिश्रण पाया जाता है। उच्चभूमि के उत्तरी भाग में नीग्रो तथा दक्षिणी शीतोष्ण भागों में यूरोपीय निवासियों की प्रधानता है। 1922 में गोरी जातियाँ कुल जनसंख्या की आधी (51% थी जो बढ़कर 1940 में 2/3 (63%) हो गई नीग्रो की संख्या भी बढ़ रहीं है तथा उ० पू० भाग में नीग्रो तथा यूरोपीय जातियों का मिश्रण भी हो रहा है। उच्चभूमि के सागरतटीय

एक–तिहाई क्षेत्रफल में लगभग 90% जनसंख्या पायी जाती है जो तीव्रगति से बढ़ रही है। सागरतटीय स्थिति स्वास्थ्यवर्धक जलवायु, कृषि एवं पशुपालन के उपयुक्त समतल भूमि, उर्वर मिट्टी तवा खनिज एवं शक्ति संसाधनो की उपलब्धता इत्यादि कारक इस विशाल जनसमूह के केन्द्रीकरण के लिए उत्तरदायी हैं। लगभग 2/3 जनसंख्या आमीण है परन्तु नगरीकरण तीव्र गति से हो रहा है। ब्राजीलिया की स्थापना के परिणामस्ठरूप आन्तरिक भाग में आर्थिक विकास तथा नगरीकरण को अधिक प्रोत्साहन मिला है। फिर भी अधिकांश नगरीय जनसंख्या मर्मस्थल में केन्द्रित है।

जहाँ ब्राजील के दो वृहतम नगर साओपोलो तथा रियोडी जैनेरो स्थित हैं और इनकी जनसंख्या में तीव्रगति से वृद्धि हो रही है। सान्तोस, बेलो होरीजोन्टे, जुइज डी निटेरोई, सोरोकावा तथा विक्टोरिया अन्य उल्लेखनीय नगर मर्मस्थल में ही स्थित हैं। रेसीफे, बाहिया (साओ सलवाडोर) ,फोर्टलेजा, नेटाल नगर उत्तरी भाग में, पोर्ट एलेग्री दक्षिणी भाग में तथा ब्राजीलिया आत्तारिक भाग में स्थित प्रमुख नगर हैं।

0.5. **आस्ट्रेलिया के भौगोलिक प्रदशों का वर्णन करें।**

उत्तर– **दक्षिणी–पूर्वी आस्ट्रेलिया** : यह आस्ट्रेलिया का सर्वाधिक विकसित प्रदेश है जहाँ शीतोष्ण जलवायु एवं पर्याप्त वर्षा के कारण सघन जनसंख्या मिलती है। इसी के अन्तर्गत मरे डार्लिंग बेसिन भी सम्मिलित है जो व्यापारिक कृषि उत्पादन एवं पशुपालन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इस प्रदेश में सम्पूर्ण आस्ट्रेलिया की 89% जनसंख्या केन्द्रित है। आस्ट्रेलिया के महत्वपूर्ण उद्योग तथा पर्थ एवं ब्रिस्वेन को छोड़कर सभी प्रमुख नगर एवं पत्तन यहीं केन्द्रित हैं। सघनतम परिवहन जाल यहीं विकसित हैं। इस प्रकार यह आस्ट्रेलिया का पर्मस्थल है। इसके अन्तर्गत न्यूमाउथवेल्स, विक्टोरिया तथाः समीपवर्ती दक्षिणी आस्ट्रेलिया के कुछ भाग एवं तस्मानिया द्वीप सम्मिलित हैं।

उत्तरी–पूर्वी आस्ट्रेलिया : इसके अन्तर्गत क्वीन्सलैण्ड तथा द० आस्ट्रेलिया का उत्तरी पूर्वी भाग सम्मिलित हैं। यहाँ तटीय क्षेत्रों में वर्षा पर्याप्त होती है परन्तु जाड़े में भी तापमान 15^0 सेग्रे० से ऊंचा होने के कारण यूरोपीय लोगों के लिये यह अनाकर्पक प्रदेश है। तटीय क्षेत्रों में कुछ पशुपालन तथा गन्ना, कपास आदि फसलों की कृषि होती है। पूर्वी तट के समानान्तर क्लोकरी माइन्स तक रेलमार्ग है। इसमें लोहा, टंगस्टन, मालिब्डेनम, तांबा, टिन, जस्ता तथा सीसा आदि खनिज मिलते हैं। इस प्रकार यह साधारण आर्थिक कार्यकलाप वाला प्रदेश है।

बृहत पश्चिमी आस्टलिया : उपरोक्त दोनों प्रदेशों के बाहर अंवशिष्ट आस्ट्रेलिया इसके अन्तर्गत आता है। यह अधिकांशतः उष्ण मरुस्थलीय प्रदेश है जिसमें जनसंख्या अत्यल्प है। पश्चिमी तट पर पर्थ के निकट पेट्रोलियम प्राप्त होता है। लोहा, मैंगनीज, तांबा आदि खनिज भी इसी के आस–पास मिलते हैं। कुलगार्डी–कालगुर्ली में सोना एवं अन्य बहुमूल्य खनिज मिलते हैं। अतएव उत्खनन कार्य के अतिरिक्त सम्पूर्ण प्रदेश में कोई उल्लेखनीय आर्थिक कार्य नहीं होता। छोरीय प्रदेशों में पशुपालन एवं कुछ कृषि कार्य होता है। पर्थ में लोहा–इस्पात एवं अन्य उद्योग मिलते हैं। अतएव पर्थ ही इस प्रदेश का केन्द्र है जहाँ जनसंख्या केन्द्रित मिलती है।

न्यूजीलैण्ड : आस्ट्रेलिया से विलग स्थित इस द्वीप का भौगोलिक स्वरूप विशिष्ट है। यहाँ वर्षा पर्याप्त होती है। यह यूरोपीय लोगों के लिए अधिक आकर्षक परन्तु धरातल बीहड़ होने एवं खनिजों के अभाव में यहाँ कृषि एवं उद्योग का विकास सीमित है। दुग्ध पशुपालन यहाँ विशिष्ट आर्थिक कार्य है। आर्थिक विकास का स्तर दक्षिणी–पूर्वी आस्ट्रेलिया के समान है।

6. **दक्षिणी–पूर्वी आस्ट्रेलिया का प्राकृतिक स्व्रूप, कृषि एवं जलवायु का वर्णन करें।**

उत्तर– दक्षिणी–पूर्वी आस्ट्रेलिया, विशेषतया ,मरे–डार्लिंग के पूर्व स्थित भाग आस्ट्रलिया का मर्मस्थल है। यहाँ देश के 15 % क्षेत्रफल पर 80 % से अधिक जनसंख्या ब्रिस्वेन तथा पर्थ के अतिरिक्त सभी बड़े नगर अधिकांश गेहूँ, बंगूर तथा सब्जी औरं फलों की कृषि दुग्ध, पशु–पालन तथा भेड़ पालन, लगभग सम्पूर्ण कोयला उत्पादन और सभी प्रमुख उद्योग केन्द्रित हैं। इस प्रकार यह पश्चिमी रिक्त आस्ट्रेलिया अथवा उत्तरी–पूर्वी अल्प जनसंख्यायुक्त कृषि प्रधान आस्ट्रेलिया से भिन्न सघन जनसंख्यायुक्त औद्योगिक आस्ट्रेलिया है। वस्तुतः यह विकसित आस्ट्रेलिया का प्रतीक है। इसके अंतर्गत न्यूसाउथवेल्स, विक्टोरिया, तस्मानिया तथा दक्षिणी आस्ट्रेलिया का. फ्लिडर्स श्रेणियों के पूर्व स्थित भाग सम्मिलित हैं।

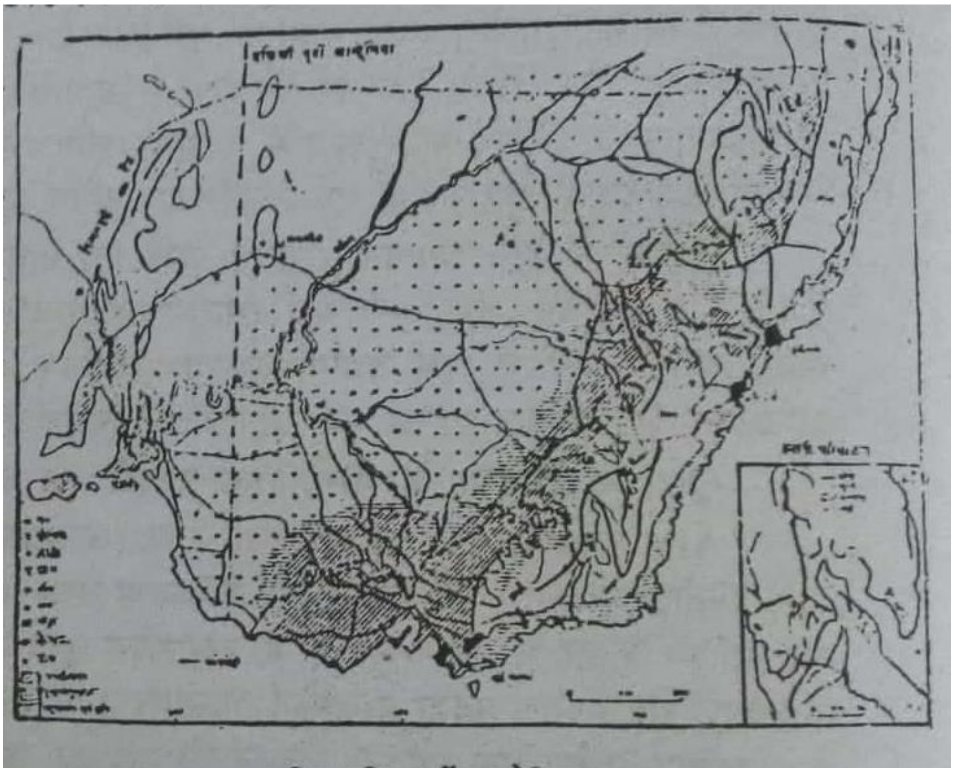

चित्र–दक्षिण-पूर्वी आस्ट्रेलिया

प्राकृतिक स्वरूप : इस प्रदेश का अधिकांश पश्चिमी में फ्लिन्डर्स श्रेणियाँ एवं पूर्व में वेट डिवाइडिंग रेज के मध्य स्थित मरें–डारलिग बेसिस में पड़ता है जिसकी ऊंचाई 200 मीटर से कम है। इसके अतिरिक्त डिवाइडिंग रेंज के पूरब समुद्रतटीय पेटी का धरातल भी200 मीटर से कम ऊंचा है। इस प्रकार प्राकृतिक स्वरूप के दृष्टिकोण से पूरब से पश्चिम निम्न चार प्रकार के उच्चावच प्रदेश मिलते है।

1. **पूर्वी समुद्रतटीय मदान** : यह प्रदेश के पूर्वी छोर पर स्थित है जिसकी औसत ऊर्जाई 50 किसी० है। सिडनी के आस–पास इसकी चौड़ाई 100 किमी० तथा दक्षिण की ओर मेलबोर्न से पूरब तथा पश्चिम 200 किमी० हो जाती है। इसी पट्टी के पश्चिमी छोर पर डिवाइडिंग रेज के स्कन्ध अथवा तीव्र पठारी उपालम्भ मिलते है। उत्तर की ओर न्यू इंगलैड पठार तट में आधिक निकट हैं जिससे कर्ड स्कन्ध लगभग तट तक पहुँच गये हैं। विक्टोरिया मे जहाँ तटीय क्षेत्र अधिक समतल और चौड़ा है, बेसाल्ट प्रवाह का क्षेत्र मिलता है जिसे 'ग्रेट विकटोरिया वैली' कहते है।

2. **पूर्वी उच्चभूमि** : समुद्र तटीय पट्टी के पश्चिम वृत्तचाप के रूप से विस्तृत है। इसकी औसत ऊंचाई सिर्फ 1000 मीटर है परन्तु बीहड़ उच्चावच के कारण शीर्ष भाग क्ये ग्रेट डिवाइडिग रेंज कहते हैं। वुस्ततः यह प्राचीन वलित श्रेणियों का क्षेत्र है जिसमें प्राचीन कठोर चट्टानों की प्रधानता है। दीर्धकालीन आपरदन

के फलस्वरूप यह समतल प्रायः निम्न पठार हो गया परन्तु अभिनव भौमिकीय युभ में पुनरूत्थान के पश्चात नदियों के सक्रिय अपरदन के परिणामस्वरूप इसका उच्चावच पुरः तीव्र हो गया। अब इस क्षेत्र में गहरी घाटियाँ प्रपात, तीव्र कगार, श्रेणियाँ तथा विदीर्ण पठारी स्वरूप के आर–पार तटीय क्षेत्र से मरे बेसिन में पहुँचना दुर्गम हो गया है। उच्चावचीय भिन्नतता के आधार पर इसके निम्न विभाग किये गये हैं ––

अं) **सिडनी** से उत्तर की ओर स्थित 1000 मीटर ऊंचा तथा लगभग 2000 वर्ग किमी॰ में विस्तृत न्यू इंग्लैंड पठार है। पूर्वी छोर पर भ्रंश कगार द्वारा यह समुद्र तटीय पट्टी से विलय है। वेलीगर सथा मैकली नदियाँ इस कगार को गहरे गार्ज द्वारा काटती हुईं 800 मीटर नीचे तटीय मैदान में उतरती हैं। पठार का शीर्ष तल साधारण झुका हुआ तथा विक्टोरिया, इलवारा आदि श्रेणियों की अधिकता हैं।

ब) **मोनरो पठार :** ब्ल्यूरेंज का विस्तार सिडनी के दक्षिण से कोसुस्को शिखर तक है जो आस्ट्रेलिया का सर्वोच्च (2230 मी०) शिखर है। यहाँ भी पठार की औसत ऊंचाई 1000 मी० है परन्तु कहाँ चौड़े वॉलित तथा भ्रशित धरातल की प्रधानता है। माउण्ट विक्टोरिया, इलावारा आदि श्रेणियाँ वस्तुतः तीव्र भ्रंश कगार है।

स) **कोसुस्को** शिखर से पूर्वी उच्च भूमि का अक्ष पुरब–पश्चिम हो जाता है। पूर्व की और कोसुस्को के निकट माउन्ट बोगोग (2180 मी०) तथा होथाम (2000 मी॰) आदि ऊंचे शिखर हैं। माउन्ट बोगोग के दक्षिण 1500 मी॰ ऊंची हा्गों उच्चभूमि है जिसके किनारे नदियों के अपरदन से आधिक कट–फट जाने के कारण श्रेणियों के रूप में परिणति हो गये हैं। इसके दूसरी और माउन्ट बुफालो है। इस भाग में ब्रेणियों की अधिकता है।

द) **डिवाइडिंग** रेंज का क्रम तस्मानिया में भी मिलता है जहाँ यह मध्यवर्ती पठार के रूप में विस्तृत है। इस पठार को उचाई उत्तर पश्चिम में 1000 मी० से दक्षिण–पूरब की ओर कई चरणों (टियर्स) में घटती है। पश्चिमी छोर पर क्रैडल माउन्टेन (1600 मी0) एल्डन
(1590 मी॰), फ्रेचमैन कैप आदि शिखर मिलते है।

3. **मरे – डार्लिग बेसिन** के अन्तर्गत द॰ पू॰ आस्ट्रेलिया का विशाल भूभाग आता है। 200 मी॰ से कम ऊचााई वाले समतल मैदान मे मरे, डार्लिग, लाचलान, मुरूमबीजी एवं अन्य सहायक नदियाँ मन्थर गाँव से प्रवाहित होती है। प्रमुख नदियाँ विसर्पण करती हुई कई धाराओं मे बॅटकर बहती है। इन नदियों ने पूरे बेसिन जलोढ़ निक्षेपित करके तटवर्ती भूभाग को ऊँचा कर दिया है।

फ्लिडर्स पहाड़ियाँ : प्रदेश को पश्चिमी सीमा पर दक्षिण–उत्तर दिशा में फैली है। इनकी सामान्य ऊंचाई 450 मी० है। इन पहाड़ियों का उत्थान अपेक्षाकृत अभिनव है जैसा कि आरोरन में एक विशाल नदी घाटी के अवशेष तथा 200 मी० गहरे बोरिंग से प्राप्त बालू तथा कंकड़ से प्रमाणित होता है। इन पहाड़ियों के शीर्ष सपाट हैं जिन पर माउन्ट लॉफ्टी (700 मी०) स्थित है। पहाड़ियों के दोनों ओर सीढीनुमा भ्रंश कगार हैं। माऊन्ट बेनबोन्नीएथ तथा संेट मेरी (1190 मी०) सर्वोच्च शिखर हैं। इनसे थोड़ी दूर ब्रोकेन हिल के निकट ग्रेरेन्ज श्रेणियाँ है जो पूरब की ओर जार्ज पर्वत होती हुईं पूर्वी उच्य भूमि से मिल जाती है।

जलवायु : द॰ पू॰ आस्ट्रेलिया मे सर्वोत्तम जलवायु दशायें मिलती हैं। नवम्बर से अप्रैल तक औसत तापमान 15.5^0 से 27^0 से॰ ग्रे० तक मई से अक्टूबर तक 10″ से 15.5^0 से० ग्रे॰ तक रहता है। वर्ष भर समान रूप

से वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा पूर्वी उच्च–भूमि से आन्तरिक क्षेत्र की ओर क्रमशः कम होती है। साधारणतया उच्चभूमि में 25 सेमी से 100 सेमी॰ तक तथा आत्तरिक क्षेत्र में 15 सेमी० से 25 सेभी० के बीच औसत वार्षिक वर्षा होती है। खो के घुछरे के पास प्रौष्प को अफेक्षा जाड़े में अधिक वर्षा होती है। इस प्रकार उत्तरी–पश्चिमी आन्तरिक भाग को छोडकर सर्वत्र वर्षों की मात्रा वर्ष में कम से कम 5 महाँने वाष्पीकरण की मात्रा से आधिक है। सम्पूर्ण प्रदेश में फसल उगाने की अवधि 8 महीने से अधिक है।

पशुपालन तथा कृषि : इस प्रदेश के अन्तर्गत पशुपालन और कृषि पूर्वी भाग में आर्थिक विकसित है। पशुपालन और कृषि के स्वरूप तथा अत्तर्सम्बन्ध के आधार पर पूरब से पश्चिम निम्न कृषि –प्रदेश सीमांकित किये जा सकते है–

1. **पूर्वी तटीय प्रदेश म** नगरीय जनसंख्या के उपयोग के लिये साथ सब्जी के खेती तथा दुग्ध पशुपालन प्रधान कृषि कार्य है। नगरों में ताजा मांस आपूर्ति के लिये क्वीन्सलैड से मांस–पशुओं मँगाकर तथा नदी – घाटियों में पासपालुम, कैक्सफुट आदि घासें चराकर उन्हें मोटा बनाया जाता है। गायें भी तटीय नदी घाटियों में पाली जाती है। आस्ट्रलेया की 50 प्रतिशत से अधिक दुधारू गायें इसी तटीय पेटी में मिलती है। इनमें जर्सी, इलावारा, शार्टहार्न, आयर–शायर, रेडपॉल तथा गुर्नसी नस्ल की गायों की संख्या अधिक है। नगरों के निकटस्थ तथा परिवहन मार्गो के किनारे स्थित डेयरी फार्मो से ताजा दूध नगरो के निकटस्थ तथा परिवहन मार्गो के किनारे स्थित डेयरी फार्मो से ताजा दूध नगरों को भेज दिया जाता है। इन गायों की घास चराने के अतिरिक्त मक्का, सूडानी घास, सोरगम, जई अथवा गेहूँ का दलिया भी खिलाते है। अपेक्षाकृत दूरस्थ फार्मो पर गायों को सिर्फ घास चराते है। इन गायों का दूध अथवा मलाई, मक्खन– पनीर निर्माणक कारखानों में भेज दिया जाता है। विक्टोरिया में जिप्सलैड शेल्क सर्वाधिक महत्वपूर्ण दुग्ध पशुपालन क्षेत्र में सिडनी के निकट बोटानी, मासकोट , कुक्स, मोना, नेपियन तथा हाक्सबरी नदी–घाटियों में फल एवं सब्जी की कृषि होती है। मेलबोर्न के निकट तटीय मैदान में फल एवं सब्जी की कृषि होती है। मेलबोर्न के निकट तटीय मैदान में फलों के बाग है।

2. **पूर्वी उच्च प्रदेश** में भेड तथा गौ–पशुपालन की प्रमुखता है। साथ ही गेहूँ की कृषि भी होती है । आस्ट्रेलिया मे भेड़ो की अधिकतम संख्या इसी भाग में मिलती है। देश मे भेड़ों की कुल संख्या 45 प्रतिशत न्यूसाउथवेल्स तथा 29 प्रतिशत विक्टोरिया मे मिलता है। भेड़ो की अधिकतम संख्या में भी ह्यस होता रहा है। लगभग 1/2 भेड़े गेहूँ फार्मा पर पाली जाती है जो फार्म के अपेक्षाकृत अधिक उँचे – नीचे भाग मे चरायी जाती है। यहाँ दो प्रकार की भेड़ होती है। मेरिनो अथवा शंकर इगु नस्ल की भेडों को मेमना प्राप्त करने के लिए पालते है। मेमनों को मोटा करने के लिए सिंचित चारागाहों पर चराया जाता है। वीदर तथा इयु भेड़ो को प्रधानतः उन प्राप्त करने के लिए पालते हैं। गेहूँ को कृषि के साथ भेड़ पालने से कई लाभ हैं। भेड़ों को दिसम्बर – जनवरी में गेहूँ की पनपी खूँटी चराते है। एक फसल काटने के बाद जो भाग दूसरी फसल बोने के पहले परती के मूप में छोड़ दिया जाता है, वह भी चारागाह का काम देता है। फार्म के अपेक्षाकृत अधिक ऊंचे–नीचे भागों में विमेरा राई घास तथा क्लोवर बोतें हैं जो पेड़ों को चराने के लिये बोई जाती हैं। बड़े फार्मों पर लगभग 1/10 भाग भेड़ों के लिए चारागाह के रूप में छोड़ते है परन्तु 200 हेक्टेयर से कम क्षेत्रफल वाले फार्म पर चारागाह नहीं छोड़े बाते वरन् किसान फसल कटाई के बाद भेड़ चराने के लिये पड़ोसी किसानों को बेच देते है।

3. **पूर्वी मरे बेसिन** में तथा पूर्वी उच्च–भूमि के पादप क्षेत्र में गेहूँ की कृषि प्रधान तथा पशुपालन गौण है। यह आस्ट्रेलिया का सबसे महत्वपूर्ण गेहूँ उत्पादक क्षेत्र है जहाँ देश का 50% गेहूँ–क्षेत्र है तथा लगभग 2/3 गेहूँ का उत्पादन होता है। यहाँ गेहूँ का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 62 बुशेल) देश में सर्वाधिक है। गेहूँ उत्पाटक क्षेत्र प्रमुखतया 20 से 25 सेमी० जाड़े की वर्षा रेखाओं के मध्य है। गेहूँ की बोवाई शरद ऋतु में प्रारम्भ होती है तथा जाड़े की वर्षा की सहायता से पौधा बढ़ता है। बसन्त ऋतु में अनिश्चित वर्षा की मात्रा के कारण उत्पादन में घट – बढ़ होती है। औसत गेहूँ फार्म 400 हेक्टेयर से

कम नहीं होता। इसमें 120–160 हेक्टेयर पर गेहूँ, 60 हेक्टेयर पर जई अथवा अन्य गौण फसलें बोयी जाती हैं तथा शेष भूमि पेड़ों को चरने के लिये छोड़ दी जाती हैं। ऐसे फार्म पर लगभग 200 मेरिनों का झुण्ड होता है। मेमनों को राई आदि के नये पौधे खिलाकर मोटा बनाते हैं।

4. **आन्तरिक मरे बेसिन** मे जहाँ कहीं सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है वहाँ गहन कृषि होती है। सिलाई की सहायता से विकसित चारागाहों पर–लुसर्न घास तथा चारे की फसलें उगायी जाती है जिनके आघार पर मेमने अथवा दुग्ध पशु पाले जाते हैं। सिंचाई का प्रयोग अधिकतर नाशपाती, अंजौर तथा रसदार फलों, सब्जी की फसलें तथा अंगूर की लता सींचने मे होता है। मरे बेसिन में इस प्रकार की कृषि 80 हजार हेक्टेयर पर होती है जिसका आधा से अधिक विक्टोरिया प्रान्त में है। एडीलेउ के निकट बारीसा घाटी मे इस प्रकार की कृषि महत्वपूर्ण है जहाँ अधिक धूपदार मौसम के कारण अंगूर की खेती अधिक होती है। नदी के दोनों और वेदिकानुमा कृषि क्षेत्र पर फलों के बाग लगाये गये है। यहाँ नदी से सिंचाई के लिये पानी पम्प द्वारा उपर उठाया जाता है। मुरूमबीजी नदी के किनारे ग्रीफिथ तथा लीटन के मध्य नहरों एवं नालियों द्वारा सिंचित क्षेत्र में अंगूर तथा गुद्देदार फलों की खेती होती है। यान्को के निकट वुरीन्जुक बांध के जलाशय से धान की कृषि भी पूर्णतया मशीनों की सहायता से की जाती है। अधिकांश हरी सब्जियाँ, फलो के रस तथा अंगूर से बनी शराब का निर्यात होता है।

5. **पश्चिमी मरे बेसिन** मे शुष्कता अधिक होने के कारण प्राकृतिक घास के आधार पर भेड़ चराने का कार्य प्रमुख है। यहाँ भेड़ो की संख्या बहुत कम है क्योकि अत्यधिक चराई, वायु – अपरदन तथा रेविट पेस्ट की वृद्वि के कारण भेडों की संख्या आधी हो गयी है। पूर्वी उच्च प्रदेश में प्रति एकड़। भेड़ मिलती है जबकि इस भाग में प्रति 12 एकड़ मे 1 भेड़ मिलती है।

6. **तस्मानिया में** तापमान अपेक्षाकृत कम तथा वर्षा निश्चित मात्रा मे होने के कारण फलो की कृषि की प्रधानता है।

7. न्यूजीलैण्ड की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करें।

उत्तर– न्यूजीलैण्ड दक्षिणी गोलार्द में स्थित है। आस्ट्रेलिया महाद्वीप के दक्षिण – पूर्व मे लगभग लगभग 1000 मील की दूरी पर स्थित इस द्वीप समूह का अक्षांशीय विस्तार 34.5^0 से लेकर 47^0 दक्षिणी अक्षांश एवं देशांतरीय विस्तार 166^0 से 178.57^0 पूर्वी देशांतर तक है।

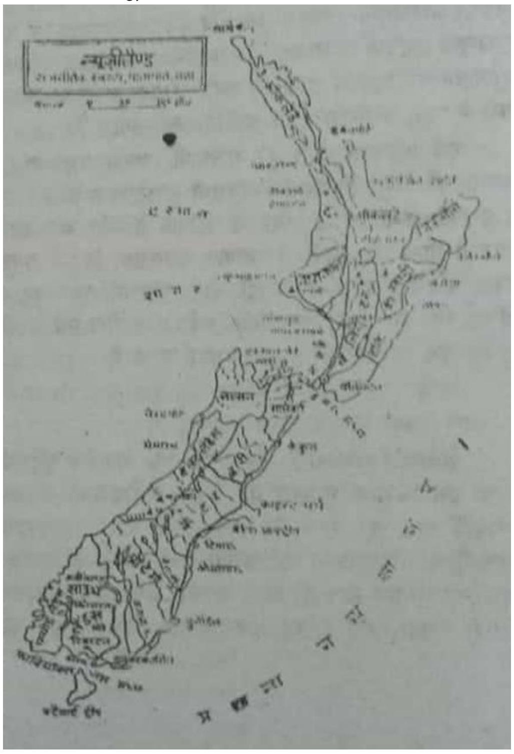

न्यूजीलैण्ड की खोज 1642 में डच अन्वेषक अबेल टस्मान ने की। जब प्रथम यूरोपियन के रूप में टस्मान यहाँ आया तो इन द्वीपों के तटवर्ती भागों में पौलीनेशियन समुदाय से संबंधित माओरी लोग निवास कर रहे थे। काफी दिनों बाद 1769 में रॉयल नेवी के कप्तान जेम्स कुक ने इन द्वीपों की यात्रा की। अपनी यात्रा के दौरान कप्तान ने दोनों बड़े द्वीपों के मानचित्र भी तैयार किए. तथा दोनों द्वीपों के मध्य में स्थित उस जलडमरू मध्य को खोज निकाला जिसका याद में कप्तान के नाम पर नामकरण संस्कार हुआ। अगली शताब्दी के प्रारम्भ में कई नाविक तथा मत्स्य व्यवसायी इन द्वीपों की तरफ गए। सन् 1800 में यहाँ के माओरी लोगों में ईसाईं मिशनरियों का कार्य प्रारम्भ हो गया जबकि ब्रिटेन से खैरेंड मुअल मार्सडेन यहाँ आये। 1840 में ब्रिटिश सरकार ने कप्तान विलियम हाब्स को माओरी लोगों से समझौता कर इन द्वीपों को बिटिश साम्राज्य में पूर्णरूपेण विलय करने भेजा। फलतः प्रसिद्व वेटांगा की संधि हुई। न्यूजीलैण्ड के इन द्वीपों को ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेश का दर्जा मिला। माओरी लोगों को ब्रिटिश नागरिकता प्रदान की गई। हाँ, इस संधि में यह अवश्य तय किया गया कि माओरी लोगो से उनकी परम्परागत और पैतृक भूमि नही छीनी जाएगी। इसी वर्ष राजधानी वेलिगटन की नींव डाली गई।

प्राकृतिक स्वरूप : न्यूजीलैण्ड एक पहाड़ी एवं पठारी द्वीपसमूह है। देश का लगभग तीन – चौथाई भाग 200 मीटर से अधिक ऊंचा है। इसका मध्यवर्ती भाग सर्वाधिक ऊंचा है जिसमें अनेक वलयाकृत श्रेणियाँ शंक्वाकार शिखर है। इसकी अधिकांश श्रेणियाँ द० प० उत्तर – पूर्व द्वीप की लम्बाई के अनुसार फैली है। दक्षिणी द्वीप की इस विस्तृत ऊची श्रेणी को दक्षिणी आत्मा के नाम से पुकारते है। यह श्रेंणी पश्चिमी तट के अधिक समीप हैं और दक्षिणी भाग में समुद्र तट पर फैली है।

8. न्यूजीलैण्ड के कृषि–क्षेत्रों एवं फसलों का वर्णन करें।

उत्तर– आस्ट्रेलिया की तरह न्यूजीलैण्ड का आर्थिक ढाँचा भी प्रमुखतः चारागाहों पर आधारित उद्यमों पर आधारित हैं। यह दुनिया के प्रधान दुग्ध व्यवसायी देशों में से एक है जिसके निर्यात का एक बड़ा भाग दुग्ध व्यवसाय से संबंधित उत्पादनों का होता है। मक्खन, पनीर, मांस, ऊन, जमाया हुआ दूध,सेव व अन्य फल यहाँ के प्रधान निर्यात हैं जो सभी कृषि क्षेत्रों से प्राप्त होते हैं। इस देश की कृषि का स्वरूप इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि भौगोलिक वातावरण के अनुरूप विकसित उद्यम कितनी तेजी से विकसित होते हैं।

न्यूजीलैण्ड के कृषि स्वरूप को निर्धारित करने में भौगोलिक वातावरण का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है। देश में लंगभग एक तिहाई भू–भाग में प्राकृतिक चारागाह क्षेत्र हैं। 28 प्रतिशत भू–क्षेत्र ऐसा है जिसमें बोई गई घासें व लगाई गई चारे की फसलें हैं। खाद्यान्न की फसलों का विस्तार 5 प्रतिशत से भी कम भू–भाग में है क्योंकि निचले भाग, जहाँ वृद्धि अवधि पूर्ण हो, बहुत सीमित हैं। दूसरे, निकट स्थित आस्ट्रेलिया से गेहूँ सस्ते दामों पर आसानी से बहुतायत से मिल जाता है। इसके विपरीत दुग्ध उत्पादनों की माँग दुनिया के औद्योगिक तथा घने बसे प्रदेशों में निरन्तर बनी रहती है। कुल भू–क्षेत्र का लगभग 18 प्रतिशत भाग वन एवं नेशनल पार्को द्वारा घेरा हुआ है। लगभग 16 प्रतिशत भूमि ऐसी है जो पर्वतीय स्वरूप तथा अन्य कारणों से व्यर्थ है। इस प्रकार भू–उपयोग को सरकारी नजर से देखने पर सुस्पष्ट हो जाता है कि लगभग दो–तिहाई भाग कृषि एवं पशुचारण के लिए प्रयुक्त हो रहा है। इसमें फसली कृषि ने अत्यन्त सीमित भाग (5 प्रतिशत) घेरा हुआ. है शेष में प्राकृतिक एवं लगाए गए चरागाह या चारे की फसले हैं।

फसली कृषि : न्यूजीलैण्ड के धरातलीय स्वरूप को देखने से स्पष्ट है कि कैंटरबरी का मैदान, तारानाकी के निचले प्रदेश ,एवं औटेगो पठार के निचले भाग फसली कृषि के उपयुक्त है। इन भागों में धूपीली अवधि, मिट्टी की उत्पादकता के अतिरिक्त घनी बसी जनसंख्या ने भी फसली कृषि को प्रोत्साहित किया है। औटेगो के पठार एवं कैंटरबरी के मैदान में वर्षा अवश्य कुछ–कम होती है जिसकी पूर्ति दक्षिणी–आल्पस से बहकर आने वाली नदियों से कर ली जाती है। वस्तुतः ये तीन क्षेत्र ही हैं जहाँ न्यूजीलैंड के अधिकांश खाद्यान्न उत्पन्न किये जाते हैं। ऑकलैंड प्रायःद्वीप की भूमध्यसागरीय जलवायु में फल एवं सब्जियाँ बोई जाती है।

यहाँ की. प्रमुख कृषि गेहूँ, जौ, जई, मक्का, आलू, राई, मटर तथा विविध प्रकार के फल हैं। उष्ण कटिबन्धीय फसलों जैसे चाय, गन्ना तथा कपास यहाँ पैदा नहीं की जाती। वैसे जितनी फसलें यहाँ बोई जाती हैं साधारणतया सभी अपने घरेलू आवश्यकता की पूर्ति करनेमें समर्थ हैं। भूमध्यसागरीय जलवायु में पैदा होने वाले आम्लिक फलों में न्यूजीलैंड न केवल स्वावलम्बी है वरन् निर्यात भी किये जाते हें। सेव यहाँ के फलों में प्रमुख है जो भारी मात्रा में (लगभग 9 मिलियन बुशल) पैदा किया जाता है। व्यापारिक स्तर पैदा किए जाने वाले फलों के बाग मुख्यतः वहाँ विकसित हुए हैं जहाँ जलवायु एवं मिट्टी अनुकूल हैं। अक्षांशीय स्थिति के कारण चूँकि उत्तरी द्वीप की जलवायु अपेक्षाकृत गर्म रहती है अतः अधिकांश फलों के बाग इसी द्वीप में है। ऑकलैंड प्रायःद्वीप के अतिरिक्त जिस्बोर्न, प्लैण्टी की खाड़ी, टौरांगा तथा कैरीकैरी प्रदेश में पर्याप्त भाग फलोत्पादक वृक्षों ने घेरा हुआ है। ऑकलैंड के बाद फलों की विविधता तथा उत्पादन मात्रा की दृष्टि से हॉक–वे जिला महत्वपूर्ण हैं। यहाँ सेब, नासपाती, आड़ू, अंगूर व अन्य फल पैदा किये जाते हैं। दक्षिणी द्वीप में भी कुछ भागों में फल उत्पादित किये जाते हैं। इनमें नेल्सन तथा मध्यवर्ती औटेगो उल्लेखनीय हैं। औटेगो के खूबानी तथा नेल्सन जिले में आडू का उत्पादन उल्लेखनीय हैं। नेल्सन जिला अपने तम्बाकू उत्पादन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हो गया है।

गेहूँ : गेहूँ का उत्पादन मुख्यतः दक्षिणी द्वीप में केन्द्रित है। आधे से अधिक गेहूँ कैंटरबरी के मैदान से उपलब्ध होता है। शेष मात्रा का अधिकांश भाग औटेगो के पठार में स्थित गेहूँ के क्षेत्रों में आता है। वार्षिक उत्पादन लगभग 3 लाख टन है जिसमें 2 लाख टन का उपयोग आटा बनाने के लिए कर लिया जाता है। इस प्रकार गेहूँ के उत्पादन में न्यूजीलैंड स्वावलम्बी है। इसमें फसली कृषि का सबसे अधिक भाग (91,500) संलग्न है। प्रति एकड़ उत्पादन लगभग 52 बुशल है। गेहूँ की खेती में सरकार का कृषि–विभाग भी रुचि रखता है। गेहूँ की विभिन्न किस्मों के विकास, प्रति एकड़ उत्पादन में वृद्धि व अन्य प्रकार से मार्ग–दर्शन हेतु कृषि मंत्रालय ने एक गेहूँ शोध संस्थान की स्थापना की है। किसान अपनी फसल का विक्रय गेहूँ बोर्ड को करते हैं। गेहूँ बोर्ड देश के विविध खपत केन्द्रों को भेजता है। गेहूँ की प्रधान किस्में आओटी, आरावा तथा गामेया आदि हैं।

जौ : जौ के भी साधारणतः वे ही क्षेत्र हैं जहाँ गेहूँ पैदा किया जाता है। पिछले दशकों में जौ की–खेती, उत्पादन एवं संलग्न भूमि में विस्तार हुआ है। उत्तरी–द्वीप के तारानाकी वैलिंगटन में भी जौ की खेती होने लगी है। कैंटरबरी मैदान उत्पादन का आधे से अधिक भाग प्रस्तुत करता है। जौ का उपयोग खाद्यान्न के रूप में प्रयोग तथा माल्टा बनाने के अतिरिक्त पशुओं को खिलाने में भी किया जाता है।

जई : गेहूँ तथा जौ के बाद जई में सर्वाधिक फसली कृषि क्षेत्र (28,000 एकड़) संलग्न है। वैसे पिछले वर्षो में इसके क्षेत्र में कमी आई है। इसका पर्याप्त भाग चारे की फसलों को दे दिया गया है। जई भी कैंटरबरी के मैदान तथा औटेगो में बोई जाती है। वार्षिक उत्पादन 1,820,000 बुशल एवं प्रति एकड़ उत्पादन 64.2 बुशल है। जई की प्रधान किसमें ओनवार्ड मापुआ, ब्लैक सुप्रीम तथा ग्रेविटर आदि हैं।

आलू : आलू की अधिकतर उपज कैंटरबरी के मैदान, बैलिगटन एवं ऑकलैंड (पुककोह क्षेत्र) से प्राप्त होती है। पिछले वर्षों में आलू का प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ा है फलतः संलग्न भू–क्षेत्र में कमी हुई है। उल्लेखनीय है कि 25 वर्ष पहले जब न्यूजीलैंड की जनसंख्या 1.75 मिलियन थी तब भी उतनी ही पर आलू पैदा किया जाता था जितनी पर आज बल्कि पिछले कुछ वर्षों में क्षेत्र कम हो गया है। आज जनसंख्या 3 मिलियन से अधिक है परन्तु उत्पादित आलू स्वदेशी आवश्यकता पूर्ति करने में समर्थ है। आलू उत्पादन उद्योग – अधिनियम 1950 के अनुसार आलू की खेती को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए 'आलू बोर्ड की स्थापना की गई है। उत्पादक क्षेत्रों से खरीदकर खपत केन्द्रों तक आलू पहुँचाने व उसकी कीमत पर नियंत्रण रखने का कार्य बोर्ड करता है। वस्तुत : बोर्ड द्वारा व्यवस्थित शोध कार्यो के ही परिणामस्वरूप आलू के प्रति एकड़ उत्पादन में वृद्वि हुई है।

अन्य फसलें : अन्य कृषि फसलों मे मटर, प्याज तथा तम्बाकू उल्लेखनीय है। तम्बाकू का उत्पादन नेल्सन जिले में मौटेका क्षेत्र तक ही सीमित हैं। प्याज की खेती लगभग 2000 एकड़ भूमि मे की जाती है। इसके प्रधान उत्पादक क्षेत्र ऑकलैण्ड का पृकेकोहे क्षेत्र, वैलिंगटन तथा कैंटरबरी का मैदान है। मटर की खेती लगभग 30,000 एकड़ में की जाती है। अकेला कैंटरबरी न्यूजीलैंड की तीन–चौथाई मटर उत्पादित करता है। यहाँ मैपिल, ब्हाइट तथा ब्लू बोइलिंग आदि किस्मों की मटर पैदा की जाती है।

फलों में सेब तथा नाशपाती व्यापारिक स्तर पर उत्पादित किये जांते हैं। इनका महत्व इस तथ्य से जाना जा सकता है कि सेव यहाँ के निर्यातों में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान लिए हुए है। सेव तथा नाशपाती के बाग प्रधनतः नेल्सन एवं हॅकि की खाड़ी क्षेत्र में हैं। थोड़ा सा उत्पादन ओटेगो के पठार तथा ऑकलैण्ड से प्राप्त होता है। चूँकि सेव निर्यात किया जाता है अतः इसकी क्वालिटी की परख के लिए 'सेव–नाशपाती मार्केटिंग बोर्ड' की स्थापना की गई है । ब्रिटेन यहाँ के सेबों का प्रधान ग्राहक है। न्यूजीलैण्ड में उत्पादित सेबों की किस्मों में 'स्टर्मर पिपिन', जोनाथन, ग्रेनी स्मिथ तथा ग्रावेन्स्टेन आदि महत्वपर्ण हैं।

****